दत्त बनी महालक्ष्मी

एक दिन शौना के स्कूल में असेंबली चल रही थी। उन्होंने राज्य के सबसे ऊँचे निर्णयपालक को भाषण देने के लिए बुलाया। वे आए। भाषण के बीच वे एक प्रतीकात्मक कहानी से गुजरे।

"एक छोटा-सा बच्चा, जो एक गरीब और ईमानदार परिवार का हिस्सा था, रास्ते में पड़ा कचरा उठाकर, उसे बेचकर, रोज़ की कमाई करता। कुछ ही सालों में एक बीमारी के कारण उसके पिता गुज़र गए। पैसों की कमी की वजह से उसकी पढ़ाई और उसकी बीमार माँ का इलाज न हो पाया। उसको हर एक रात रोते-रोते बीती।

एक दिन जब वह काम पर निकला, उसने रास्ते में एक बेहोश लड़की को देखा। वह एक सुनसान सड़क थी। जिसने भी उसे देखा, सबने अनदेखा जैसा नाटक किया। उस बच्चे को उस लड़की पर दया आई। वह उसे किसी तरह उठाकर पास वाले अस्पताल

ले गया। जिस डॉक्टर ने उसका इलाज किया, उन्होंने उस लड़के से बात-चीत करने का सोचा। ~~वे~~ लेकिन तब तक वह चला जा च,का था। डॉक्टर तो सिर्फ उस से इतना कहना चाहते थे कि वे उस लड़की को जानते है। लेकिन न-जाने वह कहाँ चला गया ?

इसी समय वह लड़का अपना काम पूरा कर रहा था। उसे उस लड़की की फिक्र थी। उसे तो पता भी नहीं था कि वह कौन थी। उसके असपताल से निकलते वक्त ही दोपहर हो गया था। घर पर उसकी माँ का ध्यान रखने केलिए कोई नहीं था। असपताल के चक्कर में तो उसकी कमाई भी कम हो गयी क्योंकि ज्यादा कचरा इकट्ठा नहीं कर पाया। कचरा कूड़ेदान में बेचते वक्त उसे कुछ पुरानी दवायीयाँ और तीसरी ~~कक्षा~~ कक्षा की पाठपुस्तकामें मिली। वह उसे अपने पास रखना चाहता था। लेकिन

उसके दुष्ट मालिक ने वह उससे छीन लिया। "रखने दीजिये ना मालिक, वह दवाई शायद मेरी माँ के काम आएगा।" बच्चा रोने लगा। मालिक ने उसे गुस्से से देखा और पूछा; "अगर मैं तुम्हें यह पुश्तैनी दवाई दे भी दूँ, तुम इन किताबों का क्या करोगे?" "मैं पढ़ूँगा, मुझे पढना है।" मालिक ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा और उसे चिढाने लगा। "अरे... एक दो किताबें पढने से एक कचरा उठानेवाला कोई राष्ट्रपती नहीं बनने वाला। अब चल, निकल!"

बच्चा उदास ज़रूर हो गया है, लेकिन उसकी आखों में एक चमक थी। उस चमक में शायद मालिक की आँखें डूब गयी होगी।

दिल में उदासी और गुस्सा भर के रखते हुए वह वापस गया। जब वह घर के आसपास पहुँचा, तो उसे लगा कि

घर में कोई आया है। लेकिन उसका अन्दाज़ा सही निकला। वहाँ उस गाँव के ज़मीन्दार के आदमी खड़े थे। वह लड़का बड़ी सादगी के साथ अपना सिर झुकाया और कहाँ, "आप लोग मेरी इस छोटी सी झोपड़ी में किस काम से आए हैं? कुछ काम था तो मैं खुद ज़मीन्दार के सामने आ जाता...।" "आपको तकलीफ लेने की कोई ज़रूरत नहीं थी।" उन्होंने बच्चे के इस व्यवहार पर खुश होकर कहाँ, "तकलीफ की कोई बात नहीं, खुद हमारे ज़मीन्दार ने ही हमें भेजा था, आपको ले जाने केलिए। गाड़ी तैयार है... आइये।" "अरे नहीं, नहीं... मैं इस गाड़ी पर नहीं बैठ सकता। मैं इस गाड़ी के लायक नहीं हूँ। जिसने अपने मेहमानों की ठीक से खातिरदारी तक नहीं की, वह इस विशाल गाड़ी के लायक कैसे हो सकता है? वैसे भी, उन्हें मुझसे क्या काम

था ?" वे कुछ न बोले। ज़बरदस्ती से उसे गाड़ी में आराम से बिठाकर ही ले गए।

जल्द ही बच्चे को ज़मीन्दार के सामने ~~पेश~~ पेष किया गया। उसने सबका वंदन कर सादगी के साथ ज़मीन्दार से ~~पूछ~~ पूछा, : "यह नन्हा कचरेवाला आपकी क्या सेवा कर सकता है हुज़ूर ?" ज़मीन्दार ने हसते-हसते कहाँ, " सेवा नहीं, मैंने तुम्हे यहाँ उपहार देने बुलाया है।" बच्चा चौंक गया। तुमने पिछले दिन किसी बेहोष लड़की की मदद की है, हैंना ?" "जी, हुज़ूर।" "तुम उसे जानते हो ?" "जी, नहीं।" "फिर तुमने उसकी मदद क्यों की ?" "क्योंकि शंकट में पड़े किसी को भी बचानेवाला ~~भगव~~ खुद भगवान बनता है, ऐसा मेरे पिताजी ने मुझे सिखाया था।" सभी ने तालियाँ बजाई। ज़मीन्दार बोले, "बहुत खूब। तुम हमे

पसंद ~~आ~~ आए।" जानते भी हो... तुमने जिसे ~~अस्पताल~~ असपताल पहुँचाया, वह और कोई नहीं, ~~हमें~~ हमारी एक नौती बेटी महालक्ष्मी है। असपताल के डॉक्टर ने मुझे सब बताया। लेकिन तब तक तुम वहाँ से चले जा चुके थे। थोड़ा वक्त लग गया था तुम्हें ढूँढने में।" बच्चा तो हैरान ही रह गया। "यह मेरा सबसे बड़ी किसमत थी कि मैं आपके काम आया।" "बोलो, तुम इसके प्रत्युपकार के रूप पर क्या लेना चाहोगे?" बच्चे ने पहले मना कर दिया लेकिन दोबारा पूछने पर ~~उसने~~ उसने कहाँ, "इस दुनिया में जिन्होंने भी मुझे कम समझा और मेरी जिन्दगी का परिहास किया, मुझे उनके सामने सीना-तान~~ने~~ कर चलना है। कृपया मेरी पढाई का इंतजाम कीजिए। लेकिन उससे पहले मुझे अपनी माँ को वापस सेहतमंद देखना है।" जमीन्दार उसकी इच्छा से खुश हुए क्योंकि बाकी

सब तो धन या फिर घर माँगते हैं ~~जब~~ जबकी इसने माँ की सेहत और अपनी पढाई माँगी। यह लड़का ~~को~~ तो उन्हें बड़ा मेहनती लगा।

उसकी सभी इच्छाएँ ~~जल्द~~ जल्दी ही पूरी हो गयी। उसने कड़ी मेहनत से कोशिश की और आखिर जीत ही गया। उसने ~~जि~~ जिंदगी में कुछ बन दिखाया; कुछ कर दिखाया।"

आँफिसर की कहानी खत्म हो गयी। बच्चे ताली बजाने लगे। अचानक एक लड़का अपनी जगह से कूद पड़ा और ~~पूछ~~ पूछा, "आज वह बच्चा कहाँ है? आखिर वह कौन था?" आँफिसर ने बड़े गर्व से कहाँ, "अगर ~~कभी~~ कोई उससे मिलना चाहता है तो बस सामने देखें.... मैं यही खड़ा हूँ,... बाबू प्रसाद ऐ.ए.एस... वही जिसकी

कहानी सुनकर आपने ताली बजाई।
बच्चों में अचानक ही हाहाकार मच गया।
असंख्य खत्म हुई। शायद उस लड़की
की बेहोशी ने समाज के एक बेहतर व्यक्तित्व
को जन्म दिया है।

संदेश : कभी-कभी, एक छोटी सी मदद
या एक छोटा सा धर्म बड़े
बदलावों का रास्ता बने। अपने
कर्तव्यों से कभी न भागें।
धर्म, करुणा, और सहानुभूती
इन्सान को बेहतर बनाती है।
जीवन में कभी-कभी रास्ते में
बेहोश पड़ी लड़की भी एक दूत
साबित हो सकती है।